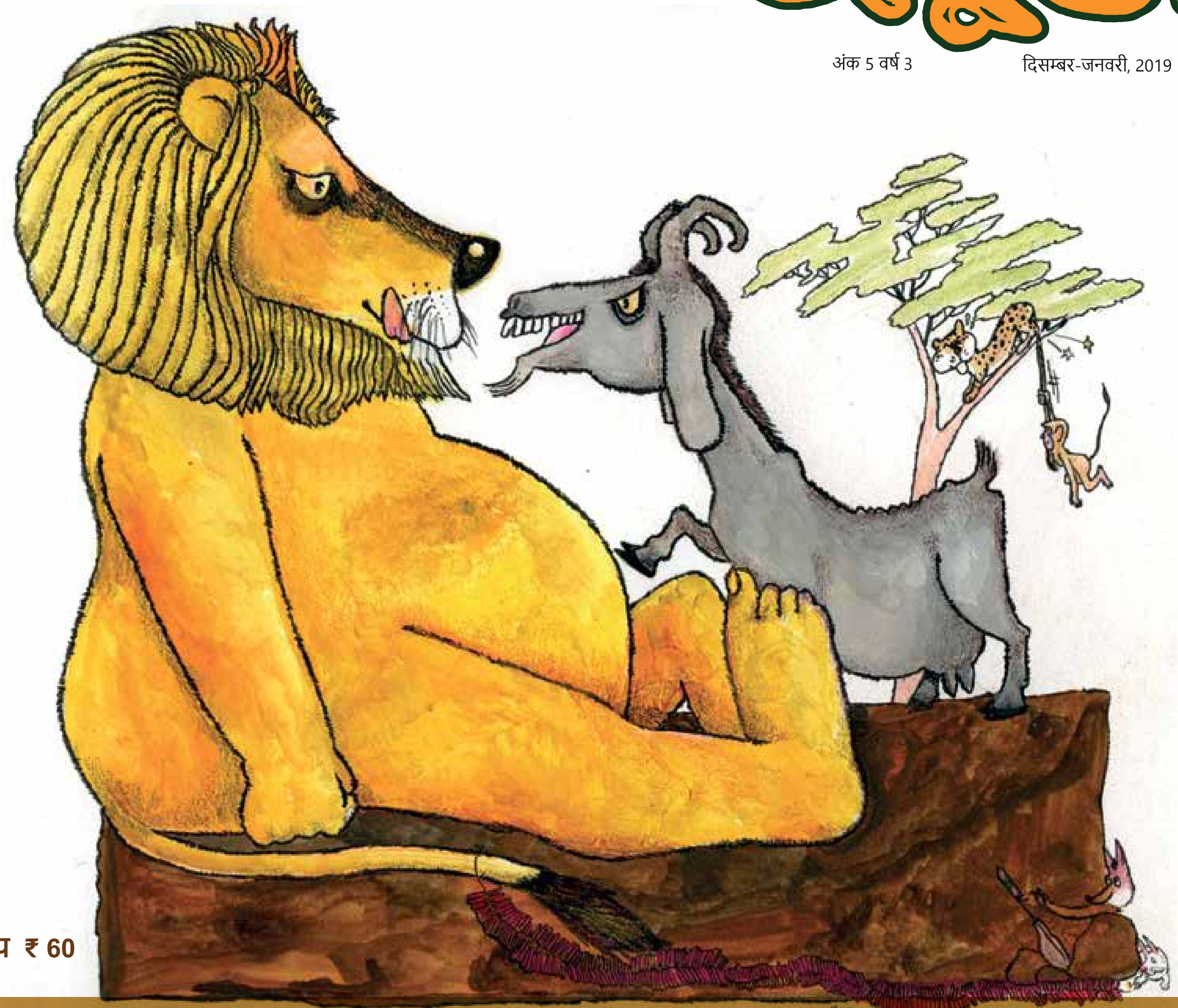
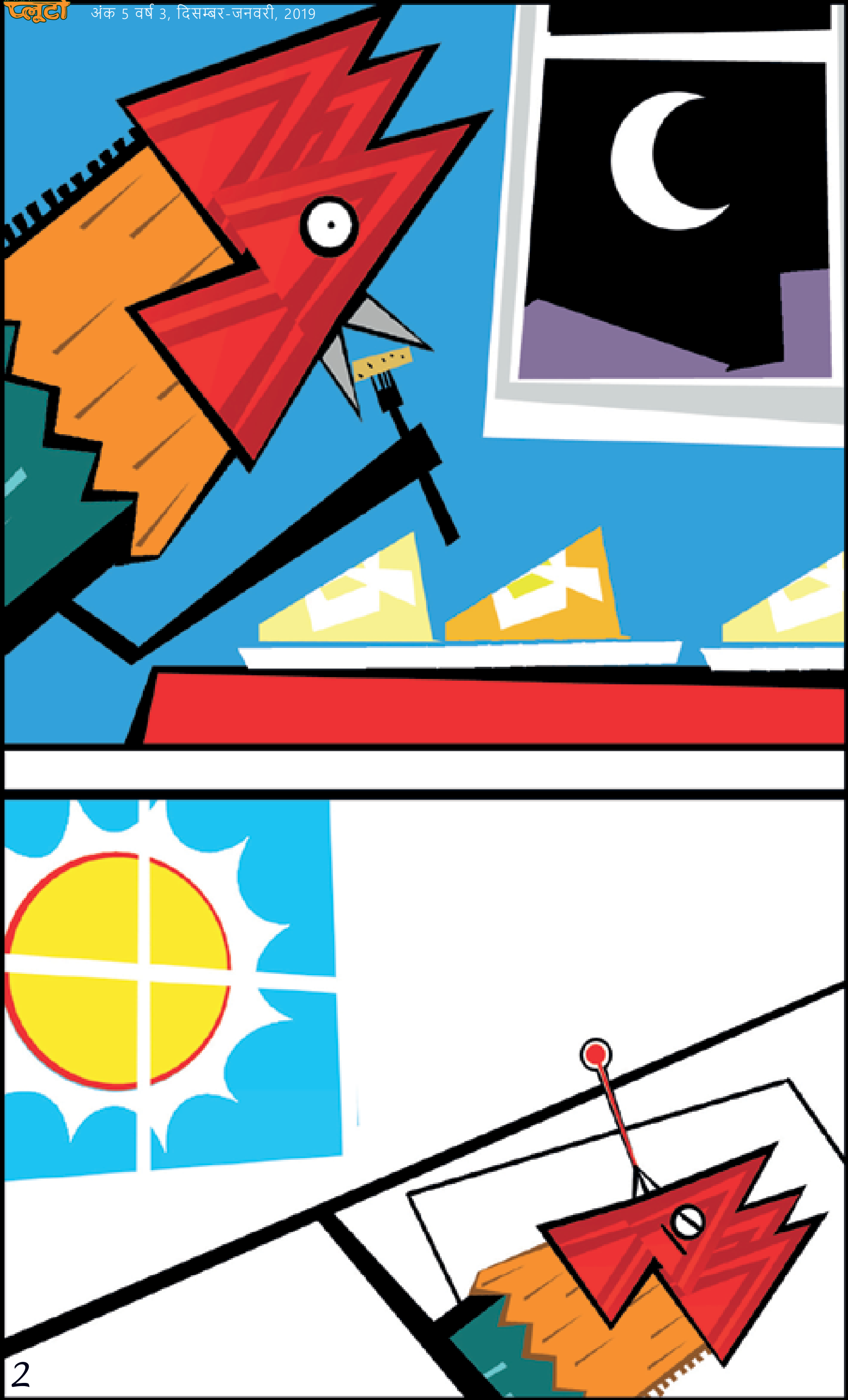
ISSN 2456-4753

प्लूटो

अंक 5 वर्ष 3
दिसम्बर-जनवरी, 2019



मूल्य ₹ 60



गुड मॉर्निंग

- लवलीन मिश्रा

मुर्गा रात को ज़्यादा खा गया

कुल्फी और कबाब

आज न होगी

गुड मॉर्निंग, जनाब!

बैठ गया है मुर्गे का गला

कैसे देगा बाँग भला?

चित्रः नबरीना सिंह

मैंने खिड़की खोली और सूरज की
चन्द किरणें मेरे घर में आ गईं।
मैंने एक डिब्बी में बन्द कर लीं
फिर जब रात में डिब्बी खोली,
रात में दिन हो गया।



ये रुई के फाहे, आसमान में क्यूँ रहते हैं?
रुई के फाहे हैं तो इनको बादल क्यूँ कहते हैं?

- बीहू, 11 साल, भोपाल



चित्र : देबब्रत घोष

दोस्त के जूते

मेंढक जूते बनाता था। एक दिन उसकी दुकान के सामने से एक काला चींटा निकला। चींटे के पास गुड़ की डली थी। मेंढक ने चींटे से कहा, “थोड़ा गुड़ दे दो। मच्छर खाते-खाते ऊब गया हूँ।” चींटा बोला, “अगर तुम मेरे दोस्त के लिए एक जोड़ा जूते बना दो तो आधा गुड़ तुम्हारा। मेंढक ने सोचा गुड़ के बदले छह जूते बनाना अच्छा सौदा है। उसने हामी भर ली। चींटे ने आधा गुड़ मेंढक को दे दिया।

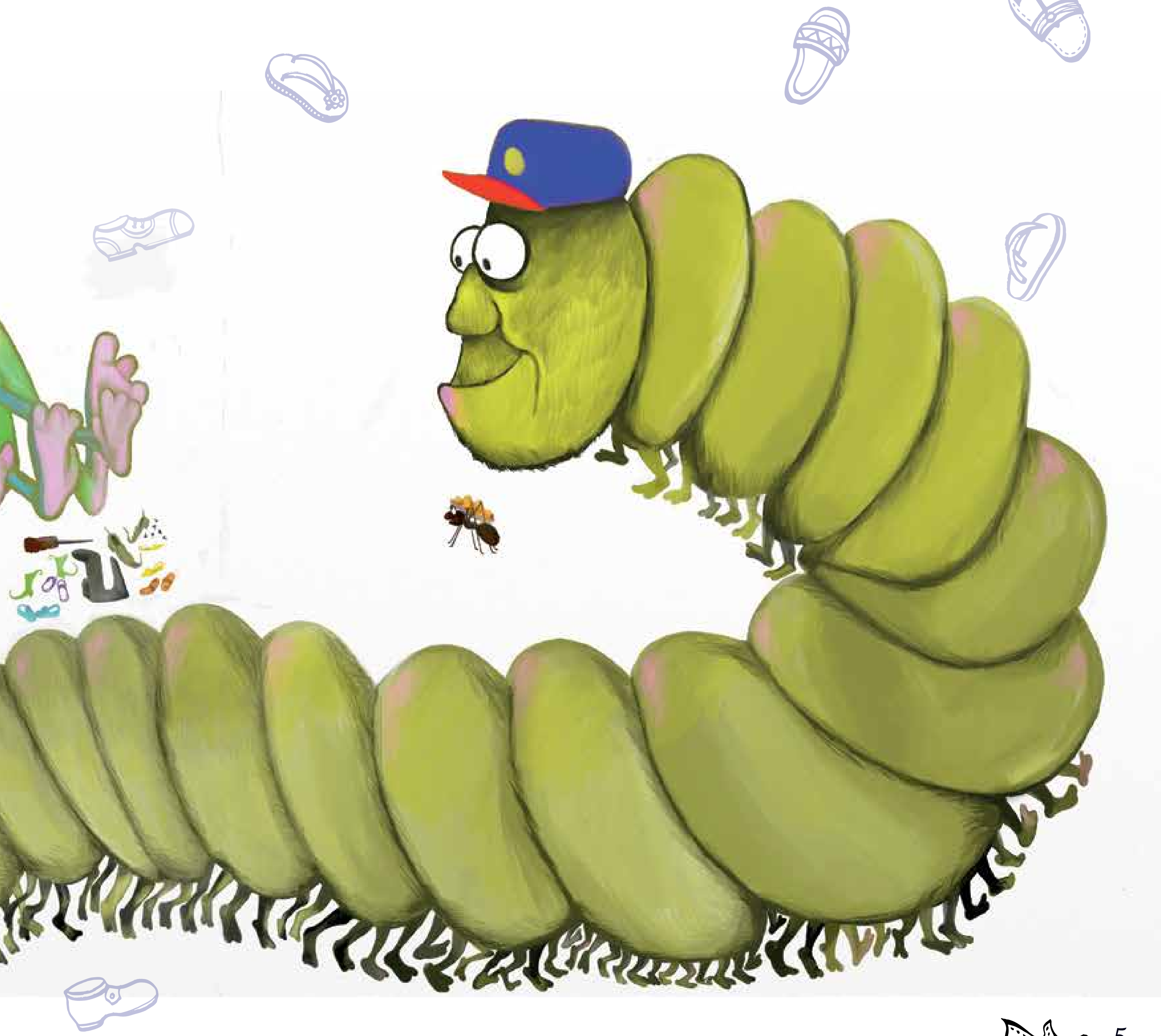
अगले दिन चींटा अपने दोस्त के जूते का नाप देने मेंढक के पास पहुँचा।

चींटे का दोस्त कनखजूरा था।

- चन्दन यादव



चित्रः अतनु राय

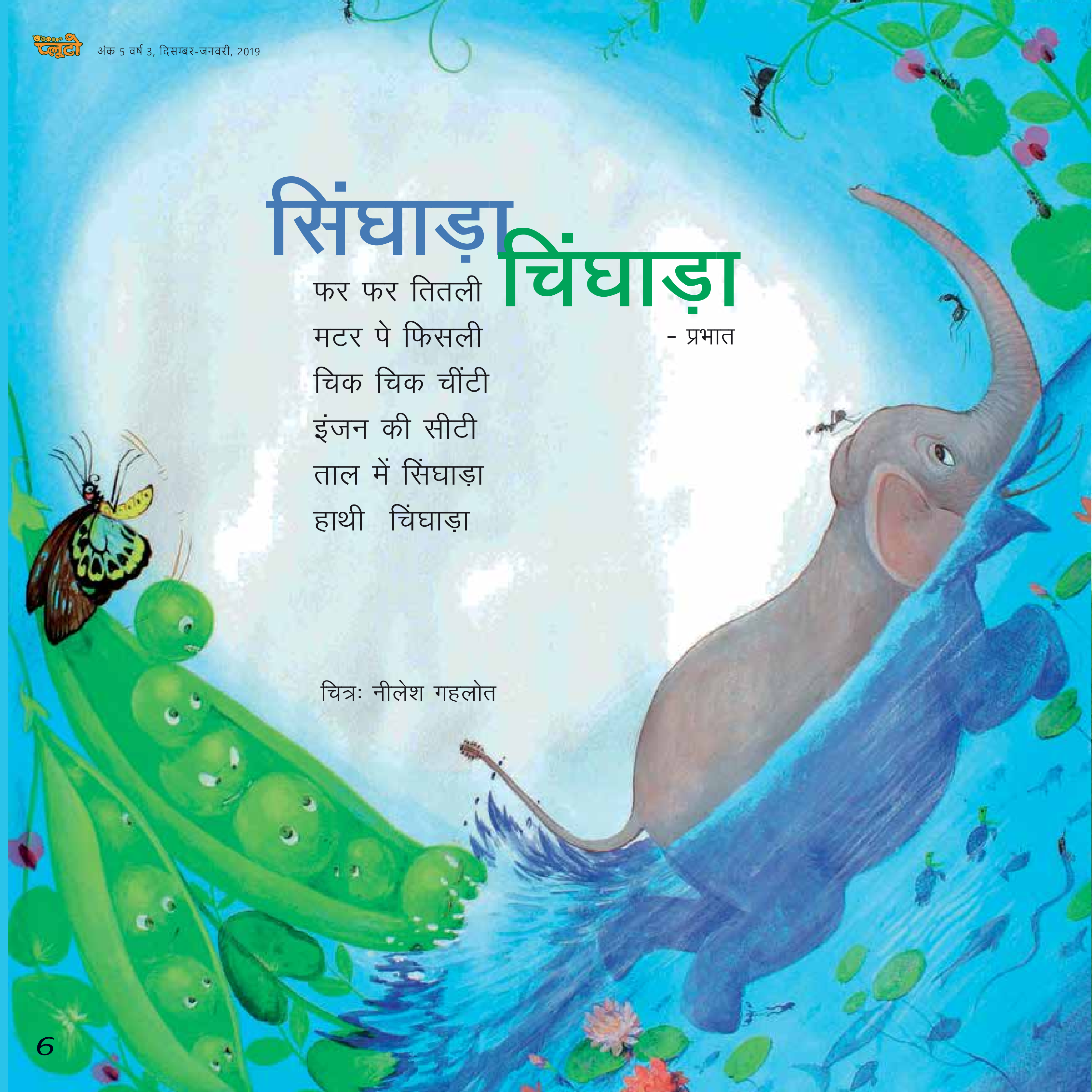


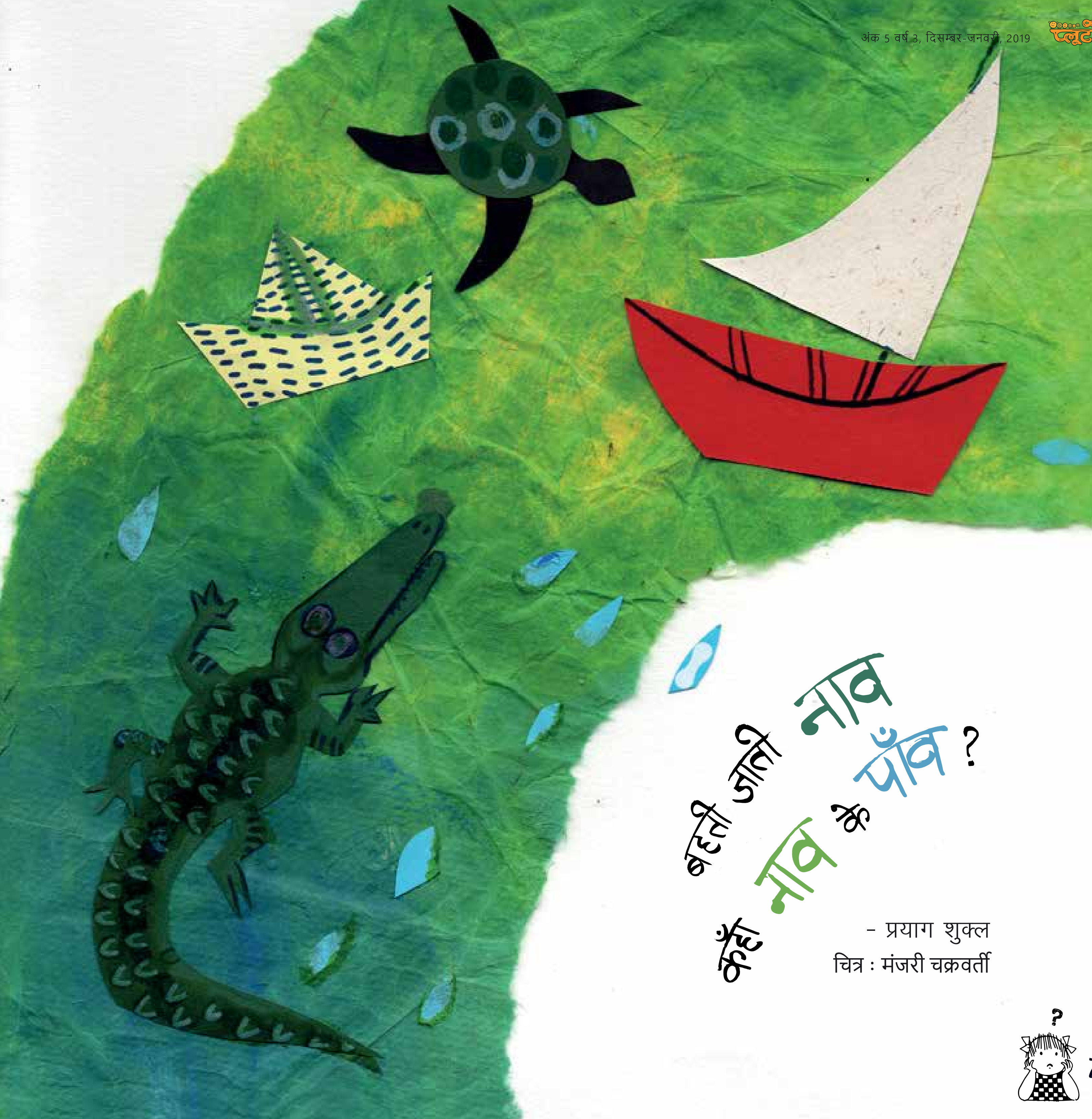
सिंघाड़ा चिंघाड़ा

- प्रभात

फर फर तितली
मटर पे फिसली
चिक चिक चींटी
इंजन की सीटी
ताल में सिंघाड़ा
हाथी चिंघाड़ा

चित्रः नीलेश गहलोत





बहती जाती नाव कहाँ नाव के पाँव?

- प्रयाग शुक्ल
चित्र : मंजरी चक्रवर्ती

बरसातें अभी शुरू नहीं हुई थीं। मैं एक शाम यूँ ही घूम रहा था। इतने में मुझे एक ततैया (Wasp) दिखी। मैंने उसके साथ पूरे दो दिन बिताए। देखो इस बीच उसने क्या-क्या किया -



चित्र - 1
जगह चुनकर बिल खोदा।

टिफिन में कीड़ा है...



चित्र - 2
एक टिड्डे को पकड़ा। उसे बेहोश किया। और उसे बिल तक लाई।



चित्र - 3

बेहोश टिड्डे को बिल के अन्दर खींचा। अब वो इस के शरीर पर अण्डे देगी। अण्डे से निकलकर बच्चे टिड्डे को खाएँगे। माँ ततैया खुद फूल-पत्तियों का रस पीती है। पर अपने बच्चों के लिए कीड़ों का इन्तज़ाम करती है।

लेख व सभी फोटोः के. आर. शर्मा



BYE - BYE

चित्रः तुरुष शाश्वती, चौथी, रायपुर



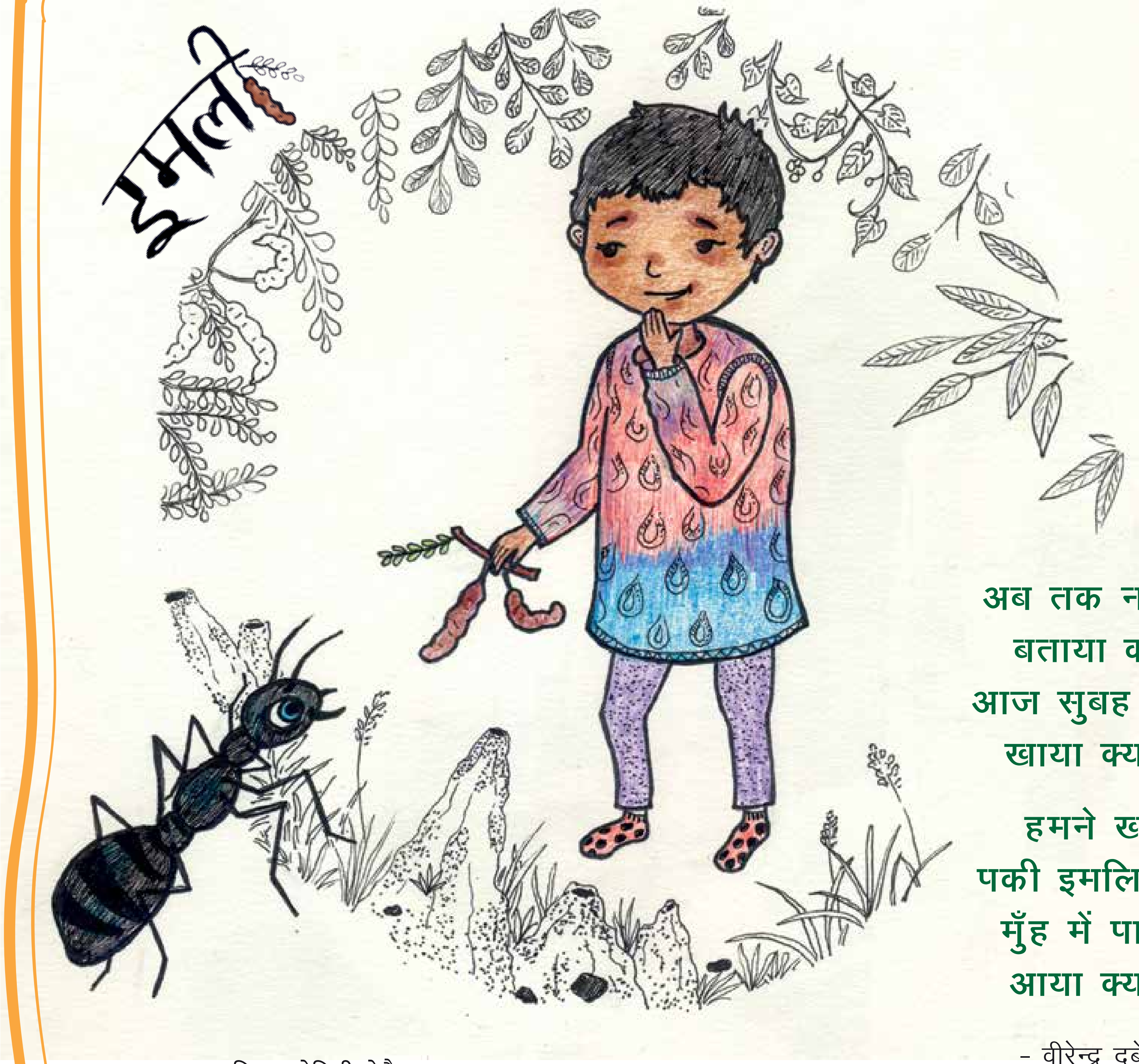
रेल चल रही कछुआ चाल
करती बुरा हमारा हाल
लम्बी-लम्बी दूरी है
चलना भी मजबूरी है

चलते-चलते सो जाती है
नहीं वक्त पर पहुँचाती है
नहीं वक्त पर करती काम
लेती है पर पूरे दाम

- काव्या, 11 साल, ग्वालियर

चित्र : कृपा भाटिया

इमली



अब तक नहीं
बताया क्या
आज सुबह से
खाया क्या?

हमने खाई
पकी इमलियाँ
मुँह में पानी
आया क्या?

– वीरेन्द्र दुबे

चित्र : प्रोमिती होसैन

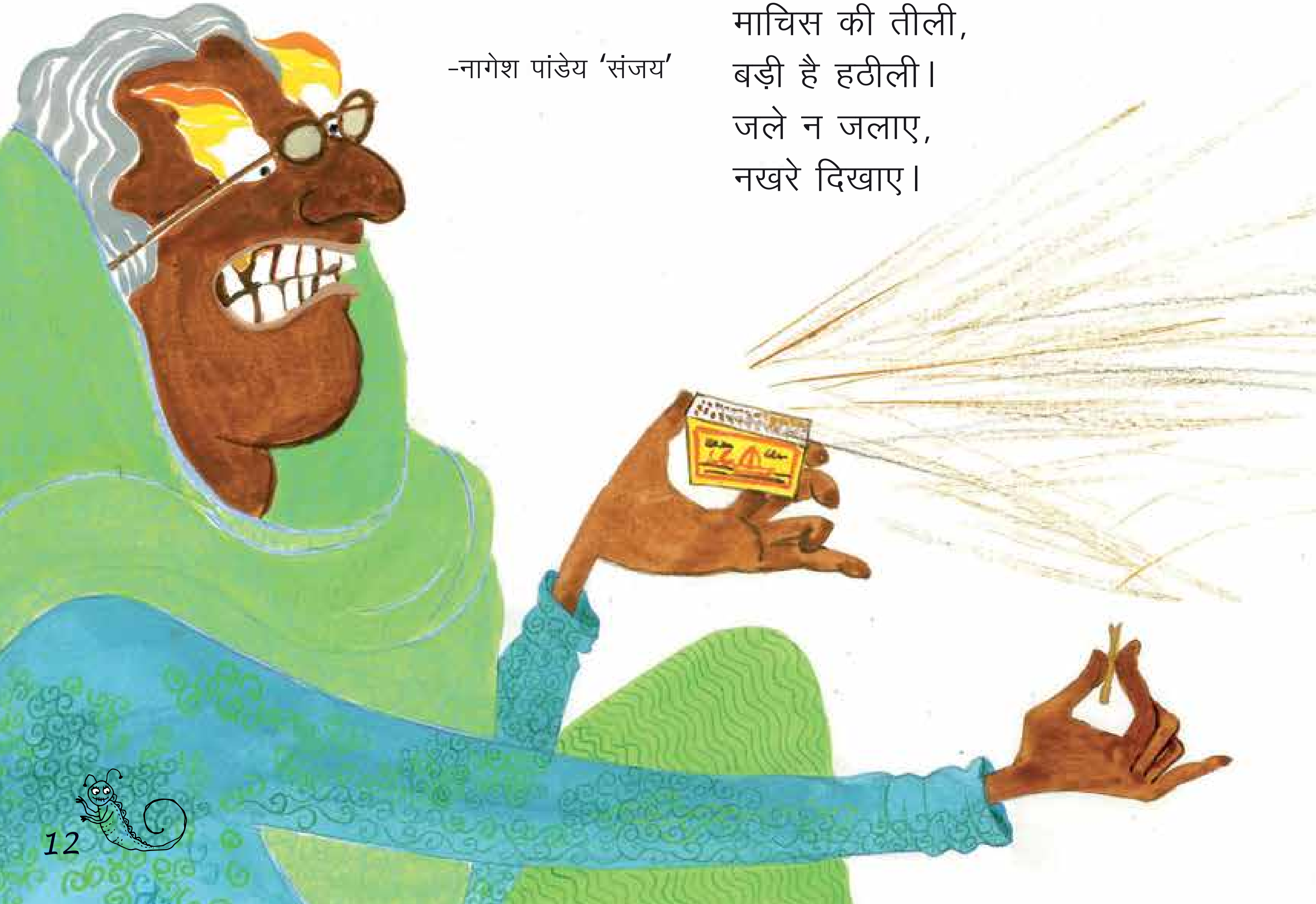
माचिस की तीली



चूल्हे पे कब से
रखी है पतीली।
कल्लू की खाला ने,
चावल चढ़ाए।

माचिस की तीली,
बड़ी है हठीली।
जले न जलाए,
नखरे दिखाए।

-नागेश पांडेय 'संजय'



कल्लू की खाला,
कैसे चूल्हा जलाए?
कल्लू की खाला,
कैसे खाना पकाए?

माचिस की तीली,
थोड़ी है गीली।
कल्लू की खाला ने,
तेवर दिखाए।

रगड़ा फिर रगड़ा,
ज़ोर दिया तगड़ा।
मसाला गया छूट
तीली गई टूट।



चित्रः तापोषी घोषाल



कार्टूनः अतनु राय

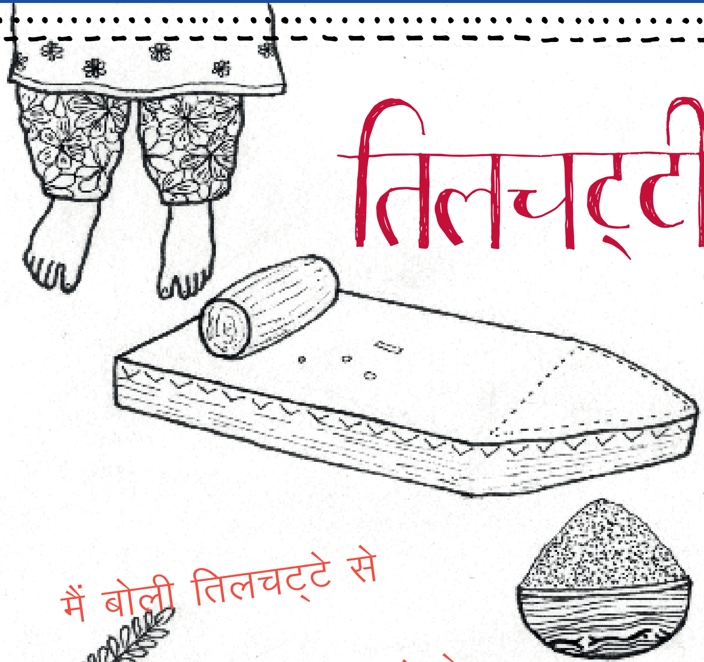
कभी एक कदम
इधर निकल जाता है
कभी दो कदम
उधर फिसल जाता है
मेरा छोटा भाई
मेरे छाते में नहीं आता है

- अनुरंजन शर्मा



चित्रः नबरीना सिंह

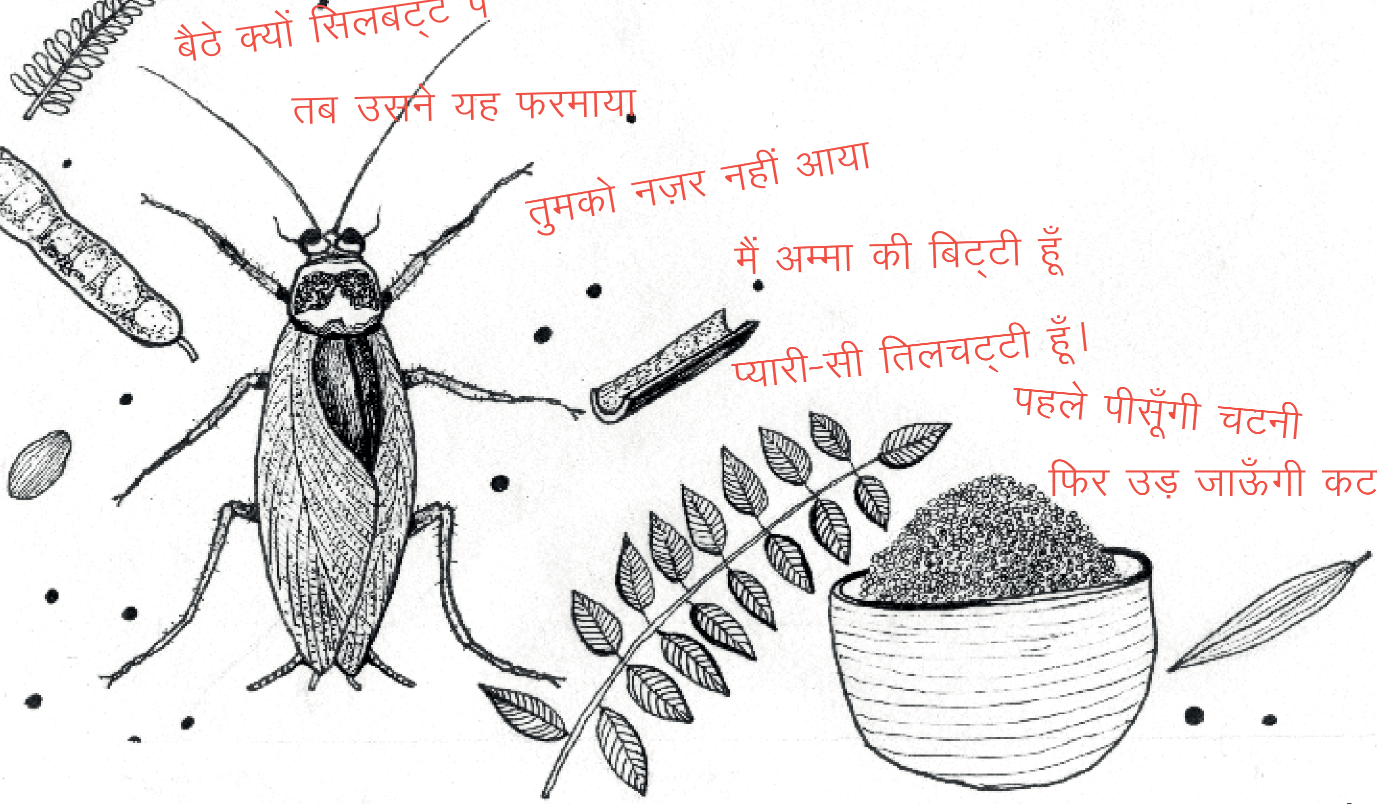
तिलचट्टी





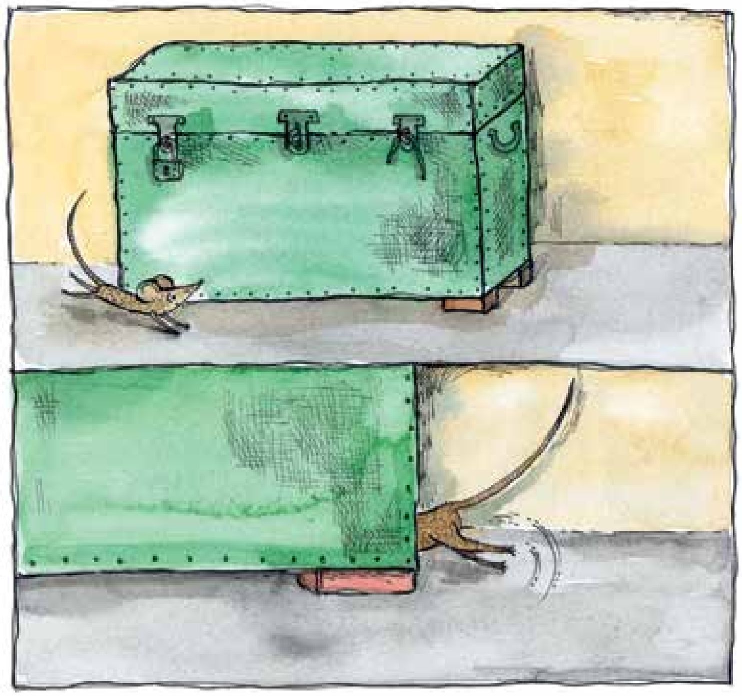
मैं बोली तिलचट्टे से
बैठे क्यों सिलबट्टे पे
तब उसने यह फरमाया
तुमको नज़र नहीं आया
मैं अम्मा की बिट्टी हूँ
प्यारी-सी तिलचट्टी हूँ।
पहले पीसूँगी चटनी
फिर उड़ जाऊँगी कटनी।

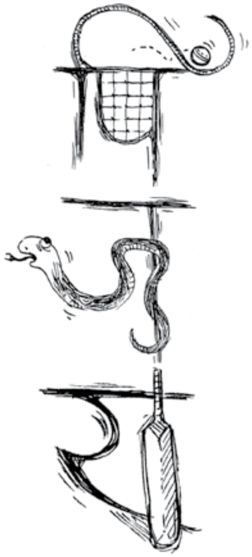
- फहीम अहमद



चित्र : प्रोमिती होसैन



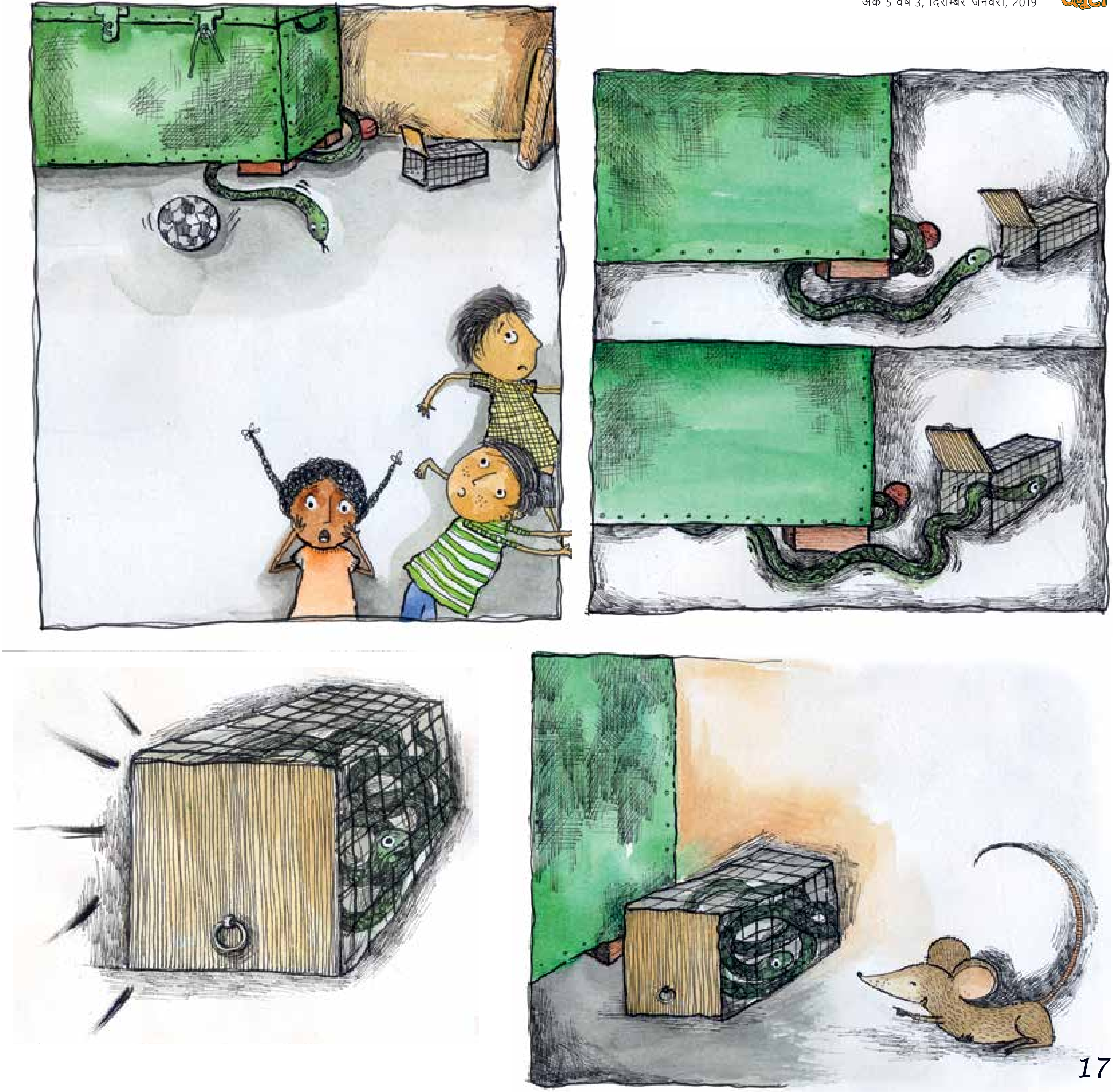


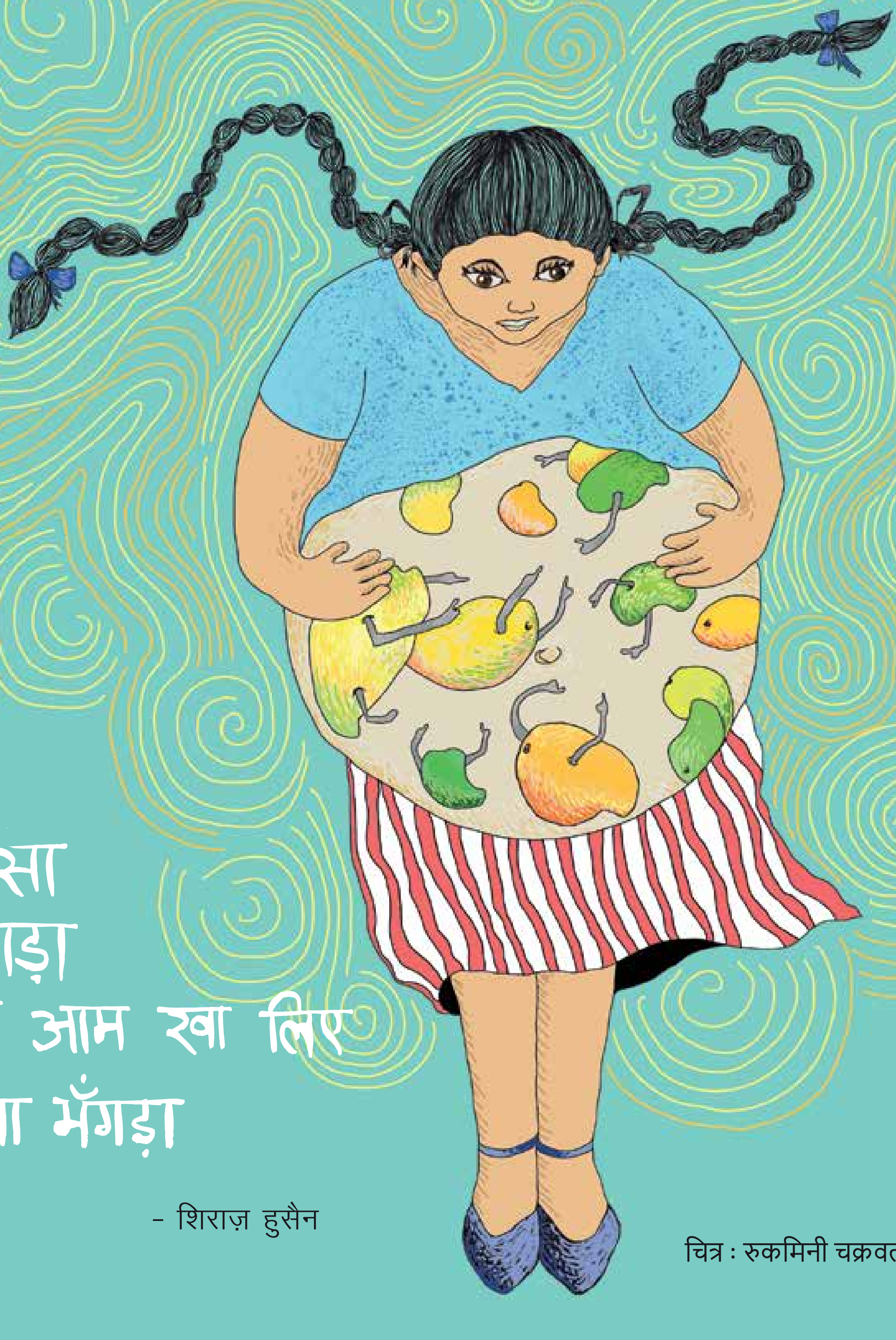




आकल्पनः सुशील शुक्ल

चित्रः प्रोइती रॉय





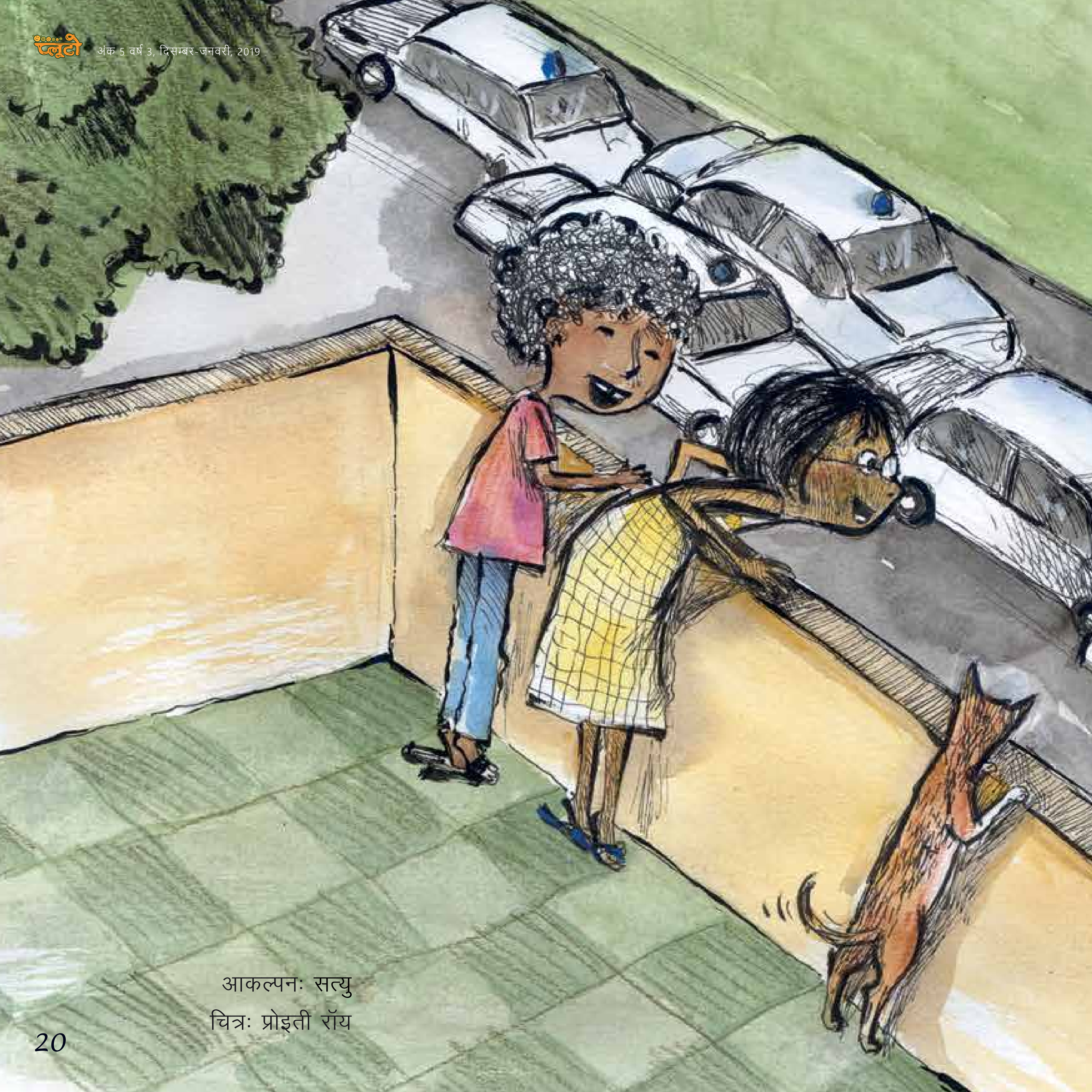
मौसी लाई चौसा
मौसा लाए लँगड़ा
जम कर हमने आम खा लिए
पेट में हो गया झँगड़ा

- शिराज़ हुसैन

चित्र : रुकमिनी चक्रवर्ती



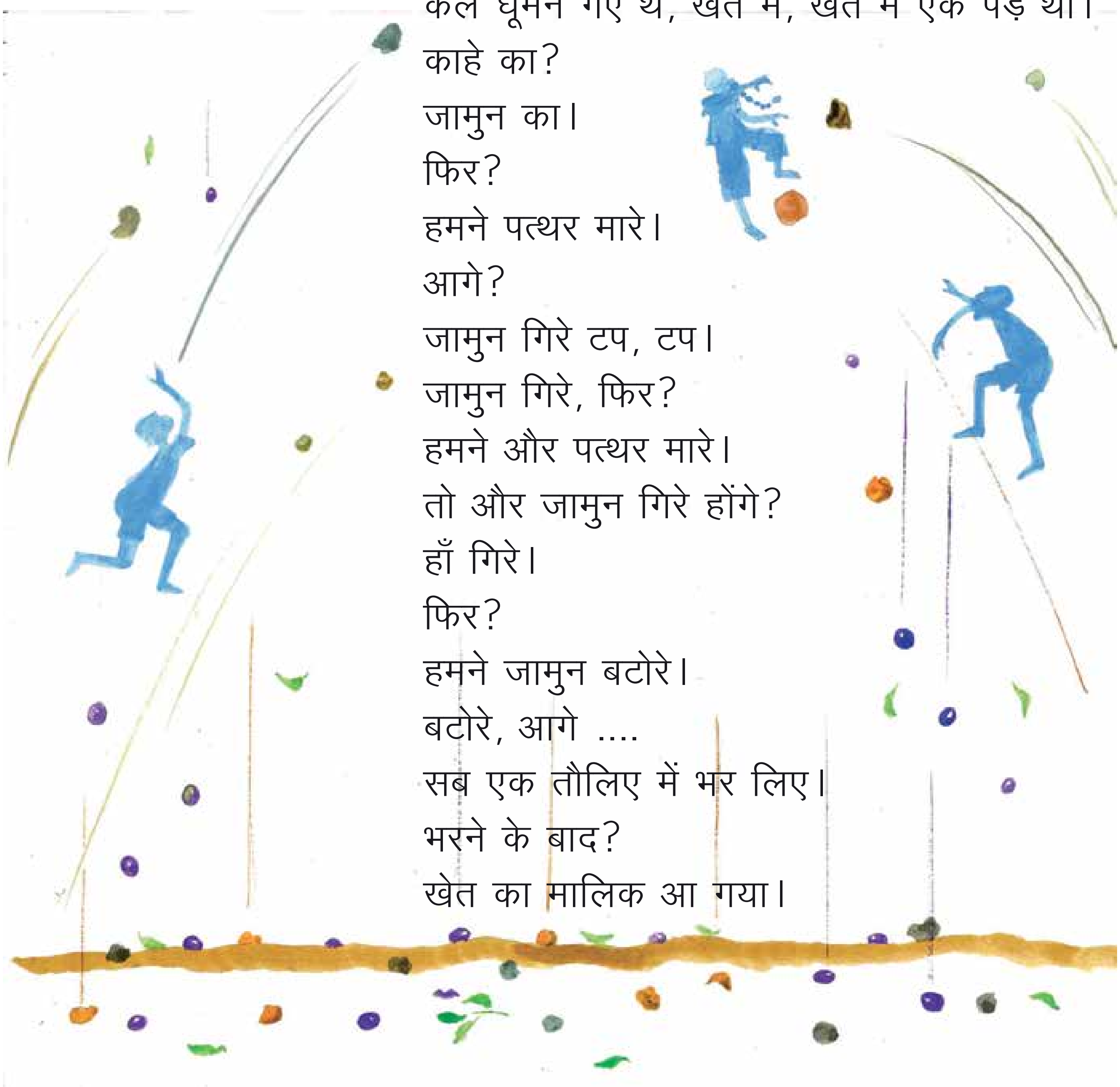
कार्टूनिस्टः इरफान



आकल्पनः सत्यु
चित्रः प्रोइती रॉय


प्रधानमंत्री
का दौरा
किंकु ने पुछा - तुम हँस क्यों रही हो ?
अनारको- मैं यह सोच रही हूँ कि
अगर कहीं प्रधानमंत्री जी को सूसू आ जाए
तो वो क्या करेंगे ?

जामुन कहाँ से आए, क्या चुराए?
नहीं रेस में जीते।
कैसे?
कल घूमने गए थे, खेत में, खेत में एक पेड़ था।
काहे का?
जामुन का।
फिर?
हमने पत्थर मारे।
आगे?
जामुन गिरे टप, टप।
जामुन गिरे, फिर?
हमने और पत्थर मारे।
तो और जामुन गिरे होंगे?
हाँ गिरे।
फिर?
हमने जामुन बटोरे।
बटोरे, आगे ....
सब एक तौलिए में भर लिए।
भरने के बाद?
खेत का मालिक आ गया।



जामुन कैसे मिले?



- प्रभुदयाल श्रीवास्तव



फिर क्या हुआ?
फिर क्या होगा, हम भागे।
भागे ही होंगे कोई चारा भी नहीं था।
फिर?
मालिक पीछे भागा।
हूँ?
हम और तेज़ भागे। मालिक ने भी रफ्तार बढ़ा दी।
तो क्या पकड़े गए?
नहीं हमने फर्राटे मार दिए। भागे भागे भागे... खूब तेज़ भागे।
अच्छा......आगे?
मालिक पीछे रह गया और हम रेस जीत गए।
जामुन भी जीत गए, रेस में।

चित्रः तापोषी घोषाल

अण्डों का रंग इस बात से तय होता है कि घोंसला कहाँ बना है। घोंसला अगर ज़मीन पर है तो शिकारियों का डर रहेगा। आसपास के रंग से मेल खाते अण्डे शिकारियों की नज़रों से बचे रह सकते हैं।



एक पेड़ की खोखल से झाँकती बसन्ता

कई पक्षी पेड़ की खोखल में अण्डे देते हैं। जैसे, बसन्ता, किलकिला। खोखल में अँधेरा होता है। इसलिए आमतौर पर खोखलवाले अण्डे सफेद रंग के होते हैं।

हमारे अण्डों का रंग क्या होगा?





खोखल में अण्डे देनेवालों में से कुछ ही पक्षी खुद खोखल बनाते हैं। कठफोड़वा इनमें से एक है। जिन पेड़ों की छाल कम सख्त होती है ये वहीं खुदाई करते हैं।



- अनिरुद्ध चावजी (रंग मंगली फाउण्डेशन)

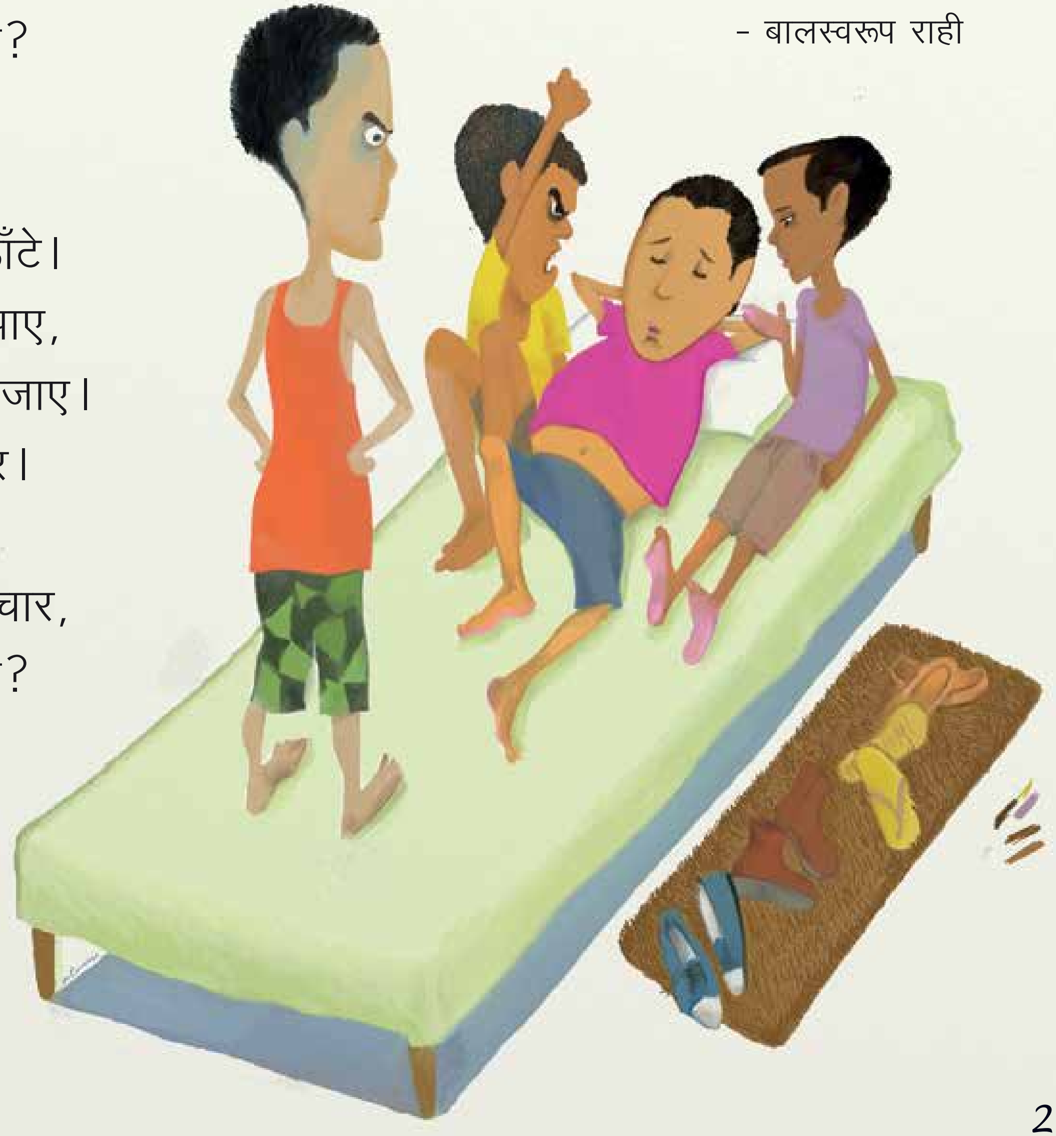
पलंग

- बालस्वरूप राही

एक पलंग पर बच्चे चार,
कैसे सोएँ टाँग पसार?

उनमें एक भरे खर्राटे
और दूसरा उसको डाँटे।
तीजा दोनों को समझाए,
चौथा जाग खड़ा हो जाए।
चारों लड़ने को तैयार।

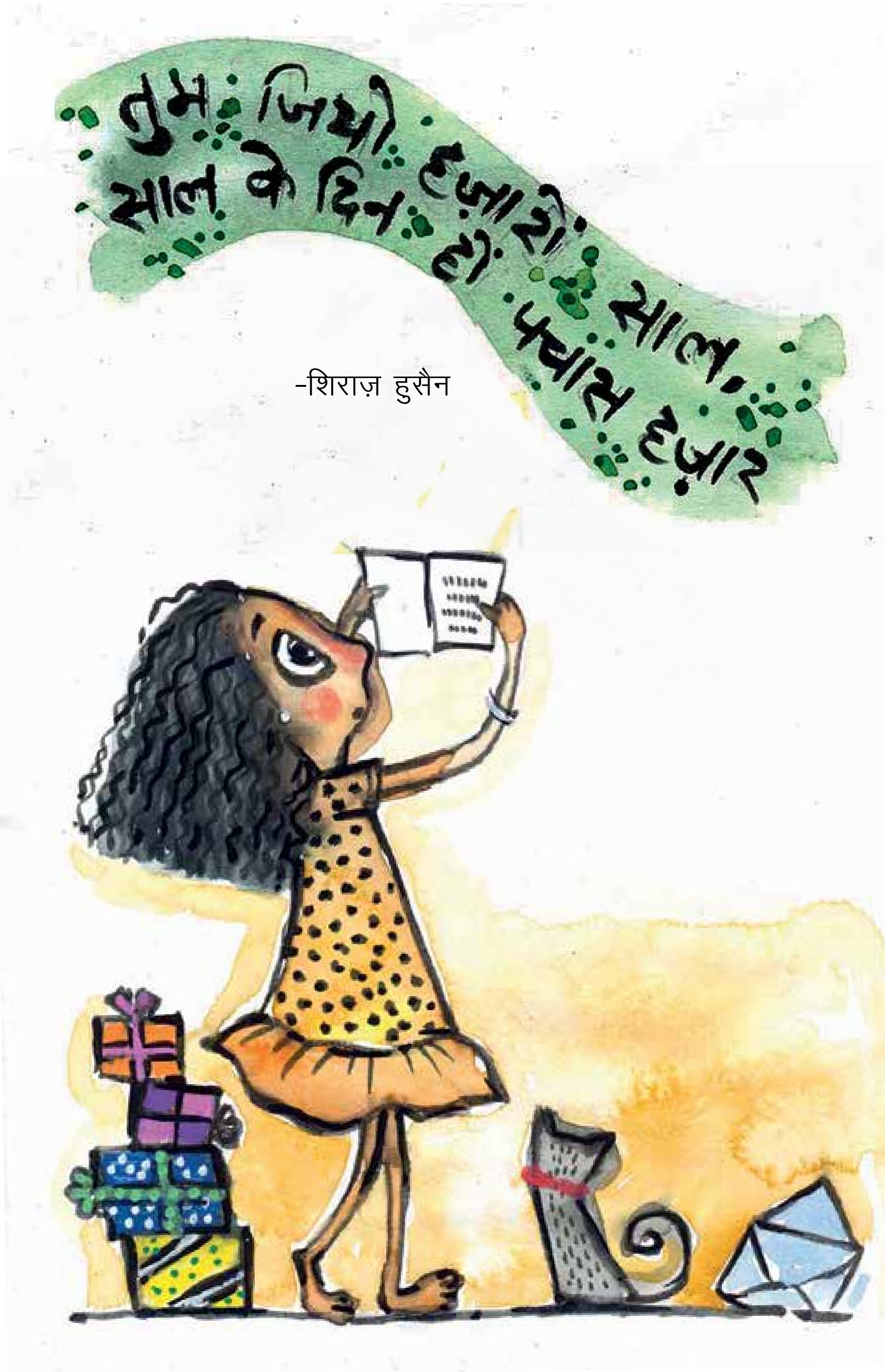
एक पलंग पर बच्चे चार,
कैसे सोएँ टाँग पसार?



चित्रः अतनु राय



आकल्पनः अतनु राय चित्रः प्रोइती रॉय



-शिराज़ हुसैन

निम्मी का कल बर्थडे था। आज सुबह से वो तोहफों को खोल-खोलकर देखने में लगी है। विनोद अंकल का दिया बर्थडे कार्ड बहुत सुन्दर था। उस पर एक कार्टून बना था और लिखा था,

तुम जियो हज़ारों साल,
साल के दिन हों पचास हज़ार

"हैं...ये कैसी कविता हुई?" वह कुछ उलझी-सुलझी सी नाना के पास दौड़ी। उन्हें कार्ड दिखाया और बोली, "नाना, पर पचास हज़ार तो बहुत ज़्यादा होता है ना? इतने साल कौन जीता है?"

नाना ने कहा, "यह तो एक तरह की दुआ है। मतलब कुछ ऐसा काम कर जाओ कि दुनिया आपको हमेशा याद रखे।"



"मतलब?" निम्मी ने ज़रा आगे आकर पूछा।

"मतलब...जैसे, मदर टेरेसा, अमीर खुसरो या गाँधीजी...ये लोग आज ज़िन्दा नहीं हैं पर इन्हें सब आज भी याद रखते हैं।"

"ओह... समझी। बढ़िया बात लिखी है।" निम्मी बोली।

"हाँ, सो तो है। यह कविता, बल्कि यह शेर मिर्ज़ा ग़ालिब ने लिखा है।" नाना ने उसके हाथ से कार्ड लेते हुए कहा।

"अरे, नानू अब यह शेर बनानेवाले गालिब कहाँ से आ गए?"

"गालिब नहीं ग़ालिब। ये उर्दू भाषा के शायर थे।



"शायर की कविता में कई सारी दो–दो लाइन्स होती हैं। ये दो लाइन्स ही शेर कहलाती हैं। जैसे,

तुम जियो हज़ारों साल
साल के दिन हों पचास हज़ार।"

कहते हुए नाना उठ खड़े हुए। निम्मी ने एकदम उनका रास्ता रोका और बोली, "नाना कोई और शेर की बात बताओ न ...अच्छा गालिब की ही बात बता दो, मेरा मतलब ग़ालिब की।"

"अरे, अब बाद में सुनाऊँगा। अभी मुझे ज़रा सब्ज़ी लेने जाना है।"



एक कागज़ लो। उसको रोल बनाकर खोल दो। वो थोड़ा-सा गोल हो जाएगा। चित्र में दिखाए तरीके से उसे टेबिल पर रखो और बीच में फूँक मारो।
क्या हुआ? वो ऊपर उठा या नीचे दबा?

दो कागज़ों को चित्र में दिखाए तरीके से पकड़ लो। दोनों के बीच बहुत दूरी न हो। उनके बीच की खाली जगह में कसकर फूँक मारो।
क्या हुआ?

प्लूटो
इकतारा द्वारा विकसित

सम्पादनः सुशील शुक्ल
शशि सबलोक
डिज़ाइनः प्रोइती रॉय
आवरण चित्रः अतनु राय

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित, **सम्पादकः सुशील शुक्ल**

सम्पादकीय पताः
ई-7/413 एच आई जी, प्रथम तल
अरेरा कॉलोनी भोपाल - 462016
फोन - 0755 2446002, 0755 4939472
8989544927, 9109915118
ई मेलः pluto@ektaraindia.in
www.ektaraindia.in



कहते हैं कि साँप सपेरे की बीन पर नाचता है...
पर साँप के तो कान ही नहीं होते। उसे कुछ सुनाई नहीं देता। सपेरा बीन हिलाता है। और साँप उसकी के हिसाब से हिलता-डुलता है। हमें लगता है वो नाच रहा है।



कहते हैं कि साँप दूध पीता है...
पर सच तो यह है कि साँप दूध हजम ही नहीं कर सकता। उसे तो चूहे पसन्द हैं...

आकल्पन और चित्रः रोहन चक्रवर्ती

आर एन आई न. DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

एक छत्तीसगढ़ी लोककथा

एक बकरी चरने के लिए जंगल गई। वहाँ सामने **शेर** आ गया। बकरी पहले तो घबराई। फिर हिम्मत जुटाकर बोली, "अगर मुझे न खाओ तो मैं तुमको तीन सच्ची बातें बताऊँगी।"

शेर बकरी की बात मान गया।

बकरी बोली, "पहला सच - अगर तुम मुझे न खाओ और यह बात जाकर दूसरे **शेरों** को बताओ तो वे तुम्हारी बात को झूठ समझेंगे। सच है न?"

शेर बोला, "एकदम सच है। दूसरा सच बताओ।"

बकरी बोली, "अगर तुम मुझे न खाओ। और मैं यह बात दूसरी बकरियों को बताऊँ तो वे मुझे झूठा समझेंगीं। सच है ना?"

शेर बोला, "हाँ यह भी सच है। अब तीसरा सच बताओ।"

बकरी बोली, "तीसरा सच यह है कि तुम्हारा पेट भरा है। अगर ऐसा नहीं होता तो मैं अब तक तुम्हारे पेट में होती।"

सुनकर **शेर** को हँसी आ गई। बोला, "हाँ, यह भी सच है। जा मज़े कर।"

और हँसता हुआ **शेर** अपने रास्ते चला गया।

प्रस्तुति - चन्दन यादव
चित्रः अतनु राय